गुरु नानक - सबद १०७

फकड़ जाती फकड़ु नाउ ॥

रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ८३

फकड़ जाती फकड़ु नाउ ॥
सभना जीआ इका छाउ ॥
आपहु जे को भला कहाए ॥
नानक ता परु जापै जा पति लेखै पाए ॥१॥

सार: अनेक रूपों और विभिन्नताओं के नीचे एक गहरी एकता विद्यमान है, एक शांत शक्ति जो बिना किसी भेदभाव के समस्त जीवन का पोषण करती है। यह बिना किसी निर्णय या ऊँच-नीच के सबको समान रूप से सहारा देती है। जब हम इस सच्चाई को समझते हैं तब तुलना और प्रतिस्पर्धा की ज़ंजीरें टूटने लगती हैं। अलगाव की भावना पिघल जाती है और साँझा जुड़ाव का गहन बोध सामने आता है। दूसरों से ऊपर उठने की कोशिश करने के बजाय, हम उनके साथ सामंजस्य में जीने की सुंदरता को अपनाते हैं। इस जागरूकता से, करुणा स्वाभाविक रूप से पनपती है जो हमें एक अधिक जुड़ाव वाले संतोषजनक जीवन की ओर ले जाती है।

फकड़ जाती फकड़ु नाउ ॥
सामाजिक स्थिति महत्वहीन है और पहचान अर्थहीन है। यह बताता है कि मूल्य को बाहरी पहचान से परिभाषित करने की अहंकारिक प्रवृत्ति, असल में एक भ्रमक प्रयास है जो हमारे अस्तित्व की गहरी वास्तविकता को छिपा देता है।

सभना जीआ इका छाउ ॥
सभी जीवित प्राणी एक ही छाया सांझी करते हैं। यह समस्त सृष्टि की गहन समानता और पारस्परिक जुड़ाव का प्रतीक है जो एक साँझा, सर्वव्यापी स्रोत में निहित है।

आपहु जे को भला कहाए ॥
यदि कोई स्वयं को श्रेष्ठ गुणी कहता है तब यह दावा वास्तविक योग्यता के बजाय श्रेणियों के पद के माध्यम से मान्यता प्राप्त करने के अहंकार की खोज को दर्शाता है।

नानक ता परु जापै जा पति लेखै पाए ॥१॥
नानक कहते हैं कि मूल्य तब पहचाना जाता है जब विश्वसनीयता को ध्यान में रखा जाता है और अपनी अंतरात्मा में अपनाया जाता है। यह इस समझ पर प्रकाश डालता है कि वास्तविक मूल्य ईमानदारी की भावना में निहित है जिसके लिए किसी बाहरी स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है। (१)

तत्त्व: गुरु नानक पद और जन्मसिद्ध श्रेष्ठता के विचार पर सवाल उठाते हैं, यह बताते हुए कि सत्य के क्षेत्र में कोई भी दूसरे से ऊपर, ऊँचा नहीं है। मूल्य कुछ ऐसा नहीं है जिसे स्थिति या पहचान के माध्यम से ज़ाहिर किया जाए, यह ईमानदारी और उस गहरी एकता के साथ सामंजस्य बिठाने से बनता है जो सभी अस्तित्व के मूल आधार में है। जब यह सामंजस्य सच्चा होता है तब मूल्य बिना किसी घोषणा के स्पष्ट हो जाता है। यहाँ ज़ोर स्वयं को साबित करने पर नहीं बल्कि आंतरिक रूप से परिष्कृत होने पर है। परिवर्तन, प्रदर्शन के बजाय जीवन को उसका अर्थ देता है। इस तरह जीने से, करुणा स्वाभाविक रूप से तुलना की जगह ले लेती है और एकता कोई विचार नहीं बल्कि कर्मों में अभिव्यक्त होने वाला गुण बन जाती है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com